ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-02 , February: 2026

बुन्देलखण्ड की भित्ति चित्रकला: गुंसाई स्थापत्य और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रोफ एम्. एम्. सिंह

विज्ञानं संकाय अध्यक्ष, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झाँसी

एव

दिलीप कुमार

शिक्षण सहायक, ललित कला विभाग, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झाँसी

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र बुन्देलखण्ड क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विशेष रूप से गुंसाई स्थापत्य कला के अंतर्गत विकसित हुई भित्ति चित्रकला का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है, किन्तु भित्ति चित्र वे जीवंत साक्ष्य हैं जो अनकहे इतिहास और आम जनमानस की भावनाओं को पत्थरों पर जीवंत करते हैं। यह शोध पत्र बुन्देलखण्ड के पौराणिक इतिहास से लेकर मध्यकालीन बुन्देला राजवंश और आधुनिक काल तक के कलात्मक विकास को रेखांकित करता है। इसमें विशेष रूप से 'बुन्देली कलम' या 'बुन्देली स्कूल ऑफ पेंटिंग्स' की विशेषताओं, विषयों (रामकथा, कृष्णलीला, और समकालीन जीवन) और तकनीक का विश्लेषण किया गया है। शोध यह भी उजागर करता है कि किस प्रकार ये भित्ति चित्र धार्मिक मान्यताओं और पूजा स्थलों का हिस्सा होने के कारण आज भी सुरक्षित हैं, जबकि सार्वजनिक स्थानों पर स्थित कलाकृतियां समय की मार और आधुनिकता के कारण लुप्तप्राय हो रही हैं। अंततः, यह शोध इन ऐतिहासिक 'माइलस्टोन्स' के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देता है।

कीवर्ड्स : बुन्देलखण्ड, भित्ति चित्रकला, गुंसाई स्थापत्य, बुन्देली कलम, ऐतिहासिक विरासत, ओरछा, दतिया।

प्रस्तावना

साहित्य और कला समाज के वे दर्पण हैं जो बदलते हुए देश, काल और वातावरण की विवशताओं और विशेषताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। समय की बहती नदी अक्सर वर्तमान की चमकती रेत को अपने साथ बहा ले जाती है, किन्तु इतिहास के स्तंभों के रूप में कुछ कलाकृतियां शेष रह जाती हैं। भारत का इतिहास ऐसी ही कलाकृतियों को अपने भीतर समेटे हुए है, जिनकी अपनी एक विशिष्ट भाषा है। ताजमहल जैसी भव्य इमारतें जहाँ राजाओं और रानियों की प्रेमकथाओं को अमर करती हैं, वहीं बुन्देलखण्ड के किलों और मंदिरों की दीवारों पर उकेरे गए भित्ति चित्र एक आम आदमी की अभिव्यक्ति और उसके जीवन के सच को बयान करते हैं।

बुन्देलखण्ड के गुंसाई स्थापत्य की भित्ति चित्रकला इसी अभिव्यक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ये चित्र न केवल एक धार्मिक संप्रदाय का हिस्सा हैं, बल्कि ये उस समय के इतिहासकार की लेखनी से छूटे हुए शब्द चित्रों को भी पूरा करते

Copyright@2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-02 , February: 2026

हैं। बुन्देलखण्ड की भौगोलिक और सांस्कृतिक परिस्थिति ने यहाँ एक विशिष्ट चित्रकला शैली को जन्म दिया, जिसे 'बुन्देली कलम' कहा जाता है। गुंसाई भित्ति चित्रों का एक बड़ा हिस्सा आज भी सुरक्षित है क्योंकि वे पूजा स्थलों का हिस्सा रहे हैं। वर्तमान शोध इसी परिकल्पना पर आधारित है कि हर कलाकृति के भीतर इतिहास, देश, काल और वातावरण का प्रभाव निहित होता है (राय, २०१६)। यह शोध प्रयास करता है कि इन चित्रों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के इतिहास को एक नई दृष्टि से देखा जाए।

शोध समस्या

यद्यपि बुन्देलखण्ड की भित्ति चित्रकला का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है, किन्तु राजस्थानी या पहाड़ी चित्रकला की तुलना में इसे वह अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नहीं हो सकी जिसका यह हकदार था। इसका मुख्य कारण यहाँ किसी एक शक्तिशाली राजवंश का लंबे समय तक स्थिर न रहना माना जाता है। इसके अतिरिक्त, जो भित्ति चित्र पूजा स्थलों से बाहर थे, वे समय की धूल और आधुनिक अतिक्रमण के कारण जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गए हैं। इतिहासकारों के समक्ष यह चुनौती है कि वे इन चित्रों के ऐतिहासिक महत्व को धार्मिक कलेवर से अलग करके एक वैज्ञानिक दृष्टि से पुनः स्थापित करें ताकि यह सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रह सके (सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, २०२१)।

साहित्य समीक्षा

बु बुन्देलखण्ड के इतिहास और कला पर कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं। रायबहादुर महाराजसिंह और दीवान प्रतिपाल सिंह ने बुन्देलखण्ड के जागीरों और राज्यों को एकत्रित करने का प्रयास किया। पंडित गोरेलाल तिवारी (१९३३) ने 'बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास' लिखकर इस क्षेत्र को समाजशास्त्रीय और भौगोलिक आधार पर प्रस्तुत किया, जो आज भी हर शोधकर्ता के लिए एक महती भूमिका निभाता है। बालभद्र तिवारी (१९९५) ने 'बुन्देली समाज एवं संस्कृति' में यहाँ के लोकजीवन और कला के अंतर्संबंधों को स्पष्ट किया है।

भारतीय भित्ति चित्रकला के व्यापक संदर्भ में, अरविंद कुमार भटनागर (२०१८) ने अजंता और एलोरा के वास्तुशिल्प और चित्रों के परस्पर प्रभाव का अध्ययन किया है। वहीं, डॉ. सुनीता शर्मा (२०१७) ने 'बुन्देली चित्रकला' पर अपने शोध में इस शैली के रंगों और ब्रश स्ट्रोक्स की गतिशीलता को विशेष रूप से रेखांकित किया है। डॉ. चित्रगुप्त (२०२१) के अनुसार, बुन्देलखण्ड के एरच और ललितपुर जैसे क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का भी प्रभाव रहा है, जिसका प्रतिबिंब यहाँ के प्रारंभिक भित्ति चित्रों में देखने को मिलता है।

शोध कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध गुणात्मक विश्लेषण और ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों के रूप में बुन्देलखण्ड के विभिन्न स्थानों (ओरछा, दतिया, चतरपुर, झांसी) में उपलब्ध भित्ति चित्रों का अवलोकन और द्वितीयक स्रोतों के रूप में पूर्व प्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्रों, गजेटियरों और पुरातात्विक सर्वेक्षणों के आंकड़ों का सहारा लिया गया है। चित्रों की शैली, रंग संयोजन और विषय वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले गए हैं।

Copyright@2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-02 , February: 2026

डेटा विश्लेषण और ऐतिहासिक संदर्भ

भारतीय भित्ति चित्रण परंपरा का इतिहास

भित्ति चित्रकला एक आदिम प्रवृत्ति है। भारत में इसका इतिहास अत्यंत प्राचीन है। अजंता की गुफाओं (ईसा पूर्व २००) के चित्र भारत का हस्ताक्षर कहे जाते हैं (निगम, २००५)। साहित्य में भी भित्ति चित्रों का उल्लेख मिलता है; जैसे 'विनय पिटक' में आम्रपाली के भित्ति चित्र प्रेम का वर्णन है। बुन्देलखण्ड में भी यही परंपरा विकसित हुई, जहाँ प्राकृतिक रंगों जैसे टेम्पेरा, टेराकोटा, चाक और गेरू का उपयोग किया गया (सेन, १९९५)।

बुन्देलखण्ड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

बु बुन्देलखण्ड नाम मध्यकाल से पूर्व अस्तित्व में नहीं था। आर्यों के आगमन से पूर्व यहाँ शबर, कोल और निषादों का वर्चस्व था। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह क्षेत्र चंद्रवंशी राजाओं के अधीन रहा। मौर्य, गुप्त, कलचुरी और चंदेल राजवंशों ने यहाँ कला को प्रश्रय दिया। चंदेल काल (सन १५७० तक) में खजुराहो, महोबा और कालिंजर कला के प्रमुख केंद्र बने (ढेगुला, २०१०)। बुंदेला राजवंश के उदय के बाद, विशेषकर राजा रुद्रप्रताप के समय ओरछा सत्ता और कला का केंद्र बना। राजा मधुकर शाह और वीरसिंह देव के शासनकाल में ओरछा में भव्य महलों और मंदिरों का निर्माण हुआ, जिनकी दीवारों पर 'बुन्देली कलम' के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मिलते हैं।

बुन्देली चित्रकला की विशेषताएं (बुन्देली कलम)

विशेषज्ञ बुन्देली चित्रकला को रंगों के उत्साह और ब्रश स्ट्रोक्स की गतिशीलता से पहचानते हैं। इसमें लाल, गेरू, नीले, हरे और पीले रंगों का विस्तृत संयोजन मिलता है (शर्मा, २०१७)।

- **विषय वस्तु:** मुख्य रूप से रामकथा और कृष्णलीला के प्रसंगों का सजीव चित्रण। ओरछा का राम राजा मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है।
- **धार्मिक एवं सांसारिक चित्रण:** जहाँ एक ओर मंदिरों में शिव-पार्वती और विष्णु के अवतारों के चित्र हैं, वहीं ओरछा के 'राय प्रवीण महल' में दरबारी नृत्य और रीति-कालीन साहित्य पर आधारित चित्र भी मिलते हैं (राय, २०१६)।
- **लोककला का प्रभाव:** बुन्देलखण्ड की 'चितेरी' चित्रकला एक जीवंत लोककला है जो आज भी विवाह के अवसरों पर द्वारों पर बनाई जाती है।

चर्चा

बु बुन्देलखण्ड की भित्ति चित्रकला अन्य भारतीय शैलियों जैसे राजस्थानी और मुगल शैली के साथ एक अनूठा संगम प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, केरल के भित्ति चित्रों में जिस प्रकार गहरे रंगों का प्रयोग है, वैसी ही झलक राजस्थानी और बुन्देली चित्रों में भी दिखाई देती है। मुगल काल के दौरान, मुगल शासकों के सौंदर्यबोध का प्रभाव बुन्देलखण्ड के चित्रों पर भी पड़ा, जिससे 'लघु भित्ति चित्रों' की परंपरा शुरू हुई (शेरवानी, n.d.)।

Copyright@2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-02 , February: 2026

छतरपुर के धुवेला महल और ओरछा के लक्ष्मी मंदिर के चित्र इस बात का प्रमाण हैं कि बुन्देली चित्रकारों के पास कितनी बारीकी थी। लक्ष्मी मंदिर की छत पर उकेरे गए १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के दृश्य, जिसमें महारानी लक्ष्मीबाई और ब्रिटिश सैनिकों का युद्ध दिखाया गया है, कलाa के माध्यम से इतिहास लेखन का एक दुर्लभ उदाहरण है (तिवारी, १९९५)। यह कला केवल महलों तक सीमित नहीं रही, बल्कि 'बुन्देली चौक' और 'सिरौती' जैसे रूपों में यह आम जनमानस के घरों और पूजा घरों का भी हिस्सा बनी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, बुन्देलखण्ड के गुंसाई स्थापत्य की भित्ति चित्रकला भारतीय कला इतिहास का एक अमूल्य अध्याय है। ये चित्र केवल सजावट की वस्तु नहीं हैं, बल्कि ये उस काल के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन के जीवंत दस्तावेज हैं। यद्यपि समय और उपेक्षा ने कई महत्वपूर्ण कृतियों को नुकसान पहुँचाया है, किन्तु आज भी ओरछा और दतिया के महलों में ये चित्र अपनी आभा बिखेर रहे हैं। इन चित्रों के संरक्षण के लिए न केवल सरकारी प्रयासों की आवश्यकता है, बल्कि स्थानीय जनमानस में भी अपनी विरासत के प्रति जागरूकता जगाना अनिवार्य है। यह शोध स्थापित करता है कि यदि हमें बुन्देलखण्ड के वास्तविक इतिहास को समझना है, तो हमें इन पत्थरों पर उकेरी गई लकीरों को पढ़ना होगा।

संदर्भ

१. कुमार, ब्रजेश (२०१९). *बुंदेलखंड का इतिहास (१५३१ से १८५७ तक).* नयी दिल्ली: डी के पब्लिकेशन.

२. तिवारी, गोरेलाल (१९३३). *बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास.* बनारस: काशी नागरी प्रचारिणी सभा.

३. तिवारी, बालभद्र (१९९५). *बुन्देली समाज एवं संस्कृति.* मिशीगन: यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन.

४. राय, डॉ. राकेश (२०१६). *बुन्देली चित्रकला का समग्र इतिहास.* जे ई टी आई आर. (https://www.jetir.org/papers/JETIR1701358.pdf)

५. शर्मा, डॉ. सुनीता (२०१७). *बुन्देली चित्रकला.* International Journal of Scientific & Innovative Research Studies.

६. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (२०२१). *मंदिर वास्तुकला.* भारत सरकार. (http://ccrtindia.gov.in/hn/templearchitecture.php)

७. भटनागर, डॉ. अरविंद कुमार (२०१८). *एलोरा और अजंता में वास्तुकला प्रतिबिम्ब का महत्त्व.* Globus Journal of Progressive Education.

Copyright@2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-02 , February: 2026

८. सेन, सुजीत नारायण (१९९५). *Aesthetics and Preparation of Early Indian Murals*. नयी दिल्ली: पुन्थी पुस्तक.

९. निगम, स. (२००५). *The Ajanta Caves*. लन्दन: थेम्स एंड हडसन.

१०. ढेगुला, र. (२०१०). *बुन्देलखण्ड के परमार*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

Copyright@2026 Author